ड्रॅक्युला बालक

राम-रहीम

ड्राक्यूला बालक

ओह! रहीम का जीवन खतरे में है।
घुर्र... घुर्र!
ड्राक्यूला बालक ने पलंग पर बेखबर सोये पड़े रहीम की गर्दन की ओर अपने भयानक पंजे बढ़ाये!

तभी राम ने उस पर छलांग लगा दी!
हुप्प..हुप्प.. आह!

उठा-पटक की आवाज से रहीम की आंख खुल गयी।
अफ़!
इस बार तुम नहीं बचोगे शैतान!
अरे बाप रे! ड्राक्यूला बालक!

सहसा रहीम फुर्ती से उठकर स्विच बोर्ड की ओर बढ़ा...।
आज तुम दोनों की मौत निश्चित है।
जल्दी से रोशनी करूं, वरना राम का बचना असंभव होगा।
उफ!

और फिर रहीम ने जैसे ही बिजली का बटन दबाया...
आ... ई... ई...
आ गये बच्चू के होश ठिकाने।
हे ईश्वर, जान बची!

दूसरे ही पल ड्राक्यूला बालक प्रकाश से भयभीत हो खिड़की की ओर भागा...
राम, उसे पकड़ो, बचकर न जाने पाये।
घुर्र... ...घुर्र!

राम उसके पीछे लपका, लेकिन....
आह!

चीखने-चिल्लाने की आवाज सुनकर राम के माता-पिता दौड़े हुए वहां पहुंचे।
दरवाजा खोलो राम बेटे!
दरवाजा खोलो रहीम!

दरवाजा खोलो बच्चो...
राम, तुम ठीक तो हो ना?
हां! तुम दरवाजा खोलो, शायद मम्मी-डैडी हैं।

रहीम ने दरवाजा खोला।
क्या हुआ बेटा ?
ओह ! यह राम को क्या हुआ ?
यह चीख कैसी थी ?

डैडी, मैं केवल इतना जानता हूं कि अचानक ही हमारे कमरे की खिड़की खुली और एक भयानक आकृति का बौना अन्दर आया।
फिर राम ने सारी घटना विस्तारपूर्वक बता दी।

ओह ! वह अवश्य ही ड्राक्यूला बालक होगा।
हमारे बच्चों की जान खतरे में है, हमें पुलिस को फोन करना चाहिये।
बेकार है मम्मी ! हम अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे।
हां आंटी, आप हमारी चिंता बिल्कुल न करें।
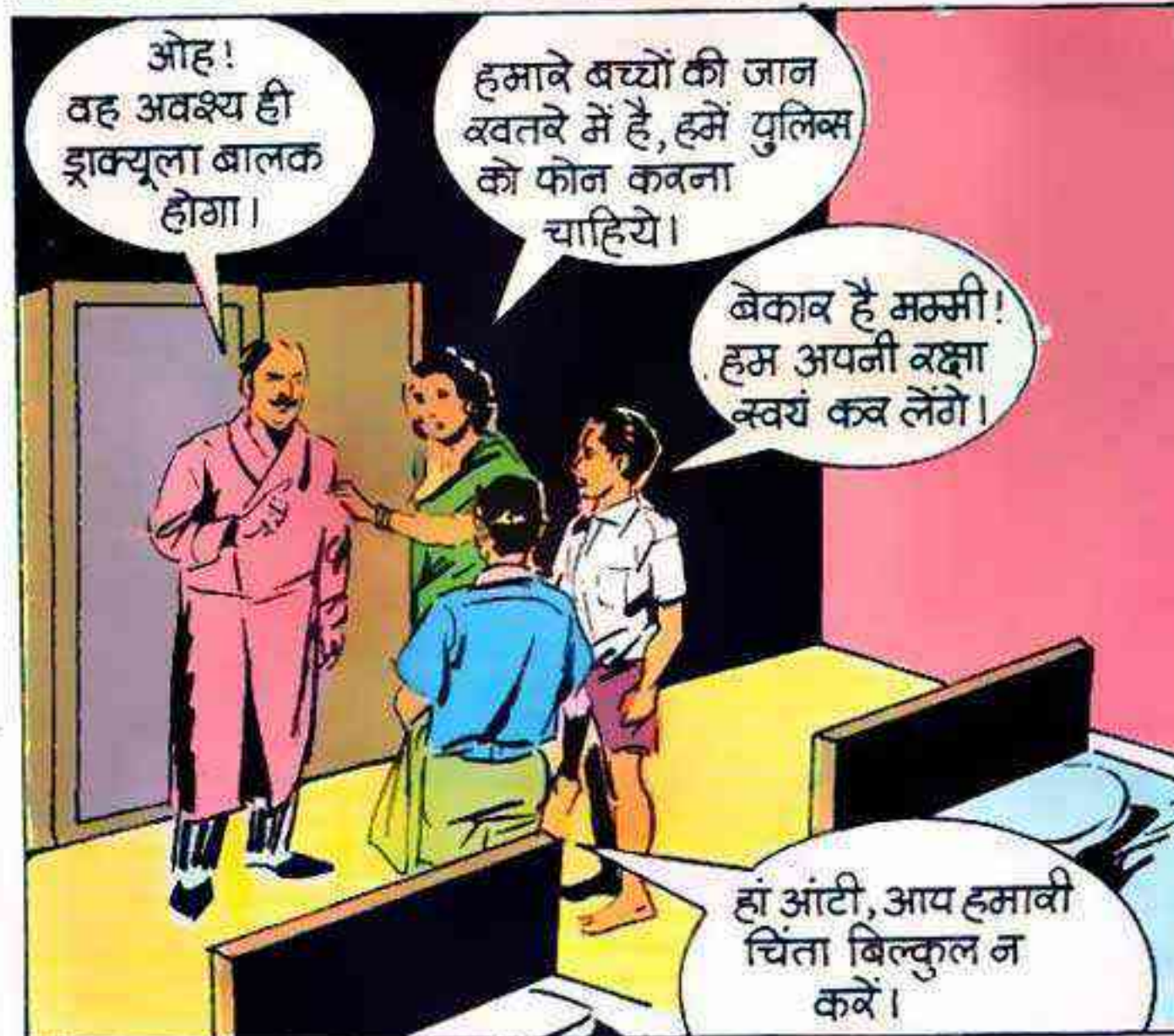
ठीक है बेटा, लेकिन अपने रिवाल्वर अब हमेशा अपने साथ रखना। ड्राक्यूला बालक का खतरा दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है।
ऐसा ही करेंगे डैडी, आप आराम कीजिए।

कर्नल राघव और राधादेवी के जाने के पश्चात.....
ड्राक्यूला बालक हमें मौत के घाट उतारने यहां तक भी पहुंच गया राम, अब क्या होगा ?
चिन्ता मत करो, एक न एक दिन वह हमारे ही हाथों मारा जायेगा, लेकिन अब हमें बहुत ही सतर्क रहने की जरूरत है।
फिर कुछ देर बात-चीत करते रहने के पश्चात वे दोनों सो गये।

उधर भूत-महल में--
यह इंजेक्शन इस मृत इंसान को मांस विहीन करके एक कंकाल में परिवर्तित कर देगा, फिर मैं इसमें प्राण फूंककर एक ऐसे जीते-जागते मानव कंकाल का निर्माण करूंगा, जिसे जीवित इंसानों के समान बोलते-चलते और कार्य करते देख दुनिया दंग रह जायेगी, और फिर--!

इंजेक्शन लगाने के कुछ क्षणों पश्चात्--
हा-हा-हा! मेरा एक और महान प्रयोग दुनिया में तहलका मचाने के लिये सफल होने जा रहा है।

अब इसमें केवल प्राण फूंकना है, जीवन पड़ते ही यह अजेय हो जायेगा, दुनिया का एक ऐसा अद्भुत इंसान, जिसका मनुष्य तो क्या गोला बारूद भी कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।
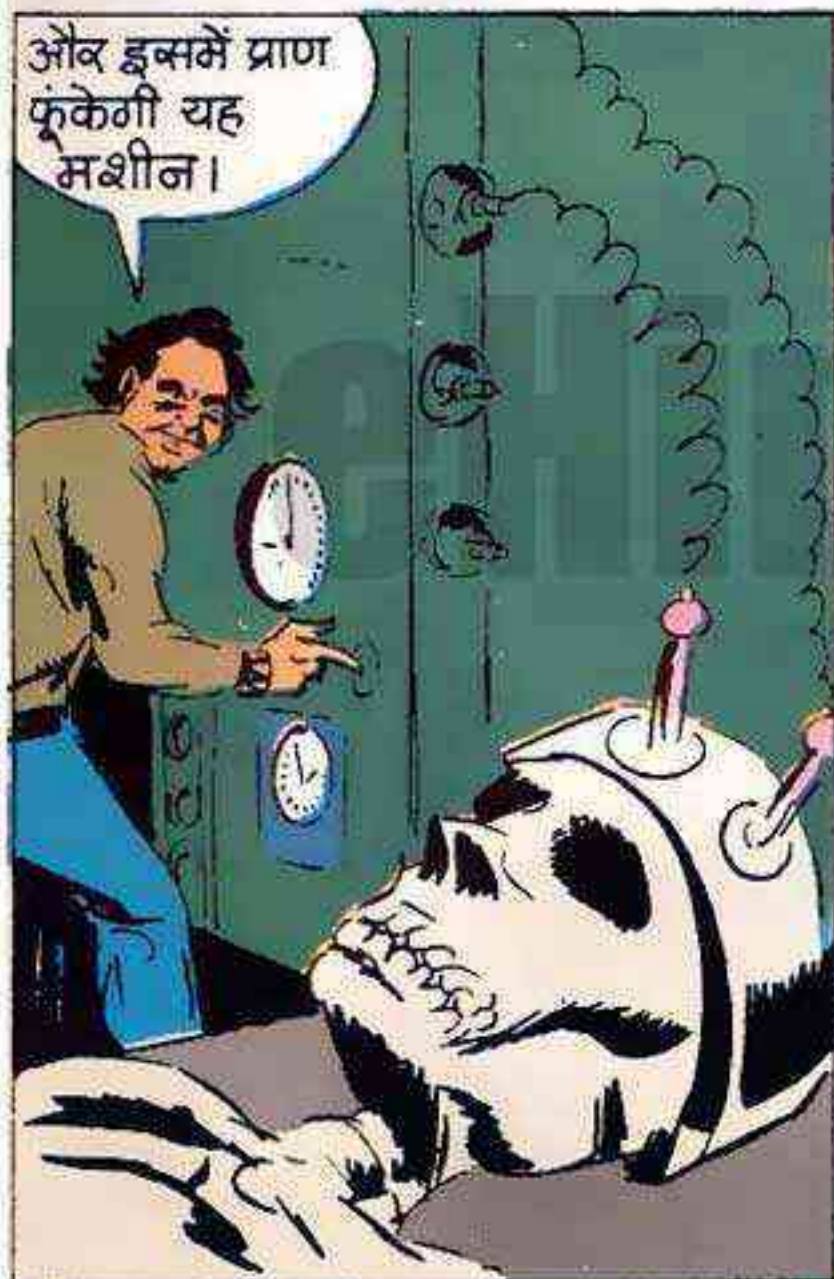
और इसमें प्राण फूंकेगी यह मशीन।

और फिर--
शाबाश मेरे फौलादी गुलाम!

मैं अजेय हूं मेरे स्वामी! परीक्षा नहीं, आदेश दीजिये!

तभी –
हा–हा–हा–! दुनिया मेरे निर्मित गुलाम का मुकाबला किसी भी प्रकार नहीं कर पायेगी।
मैं आ गया स्वामी।

ओह! तुम आ गये। देखो–देखो दोस्त, मेरा नया प्रयोग सफल रहा, इसी खुशी में आज जी भरकर दावत उड़ा लो।
लेकिन आपके लिये एक बुरी खबर है स्वामी!

मैं अपने काम में असफल रहा स्वामी! राम–रहीम फिर बच गये।
खैर, तुम चिन्ता मत करो, वे दोनों ज्यादा समय तक जिंदा नहीं बचेंगे, उनकी मौत अब ऐसे ही कंकालों द्वारा होगी।

तुम मेरे लिये लाशों का प्रबंध करो, मैं कंकालों की एक सेना तैयार करना चाहता हूं, ताकि मेरी यह सेना पूरी दुनिया को एक कब्रिस्तान बना सके। लाशों का प्रबन्ध करने में ये कंकाल भी तुम्हारी सहायता करेंगे!
जो आज्ञा मेरे स्वामी!

हा–हा–हा–! बदला लूंगा, भयानक बदला! ऐसा बदला कि दुनिया मेरे नाम से कांपेगी।

अगले दिन सुबह एक पुलिस दस्ता भूत–महल पहुंचा –
तुम लोग चारों ओर फैल जाओ।
यस सर!
भौं–भौं!

इंस्पेक्टर देव कुछ सिपाहियों को साथ लेकर भूत महल के भीतर प्रविष्ट हुआ।
सर! कुत्ते ऊपर की ओर इशारा कर रहे हैं। अवश्य ही कोई खास बात है।
हां, चलो देखते हैं।

सावधान! शायद कोई खतरा है।
चिन्ता न करें सर, हम हर खतरे से निपटने के लिये तैयार हैं।

यहां तो कोई भी नहीं है सर।
लेकिन कुत्ते भौंक रहे हैं। बात अवश्य कुछ है।

तभी इंस्पेक्टर देव की दृष्टि छत की ओर उठी।
अरे! वह देखो।

सर, यह तो किसी मासूम बच्चे की नुची-खुची लाश है।
हां! न जाने किस अभागी का लाल होगा।

सर, कहीं यह बच्चा इंस्पेक्टर शंकर का तो नहीं, जिसका कल रात ड्राक्यूला बालक ने अपहरण किया था।
कहा नहीं जा सकता।
रामसिंह, तुम तुरंत बाहर जाकर फोन पर फोटोग्राफर्स को सूचित करो। साथ ही एम्बुलेंस के लिये भी कहना न भूलना।
यस सर! मैं जाता हूं।

सूचना पाते ही फोटोग्राफर्स वहां पहुंच गये।
सर, क्या इस बच्चे की हत्या के पीछे भी ड्राक्यूला बालक का हाथ होगा?
हां! ऐसा हो सकता है, लेकिन बिना प्रमाण के हम दावा नहीं कर सकते कि इसकी हत्या भी ड्राक्यूला बालक के हाथ हुई होगी।

खैर, जब फोटोग्राफर्स अपना काम पूरा कर लें, तब तुम लाश उतरवा कर पोस्टमार्टम के लिये भिजवा देना।
यस सर!

हवलदार को आवश्यक निर्देश देने के पश्चात इंस्पेक्टर देव आस-पास छानबीन करने लगा।
अरे! वह सफेद वस्तु क्या है?

वह एक सफेद रूमाल था।
R...(आर)! यानी इस रूमाल के मालिक का नाम र से शुरू होता है। कौन हो सकता है?

इंस्पेक्टर देव ने वह रूमाल शिकारी कुत्तों को सुंघाया—
शायद ये रूमाल के मालिक तक पहुंचने में हमारी कुछ मदद करें।

रूमाल सूंघने के पश्चात कुत्ते बाहर की ओर दौड़े।
हवलदार खुशीराम, तुम दो-तीन सिपाहियों के साथ मेरे पीछे आओ।
यस सर!

फिर जल्दी ही कुत्ते भूत-महल से बाहर निकलकर एक ओर सड़क पर बढ़ने लगे।
ये तो फोर्ट स्ट्रीट कि ओर जा रहे मालूम पड़ते हैं।

कुछ समय पश्चात —
सर, यह तो कर्नल राघव की कोठी है! कुत्ते किसी भ्रम में तो नहीं फंसे।
मैं भी उलझन में हूं खुशीराम, लेकिन तहकीकात तो करनी ही पड़ेगी।

उस समय राम-रहीम अपने माता-पिता के साथ नाश्ता कर रहे थे।
साहब, पुलिस आपसे मिलना चाहती है।
पुलिस — ओह! चलो मैं आता हूं!
पुलिस!
?

गुड मार्निंग कर्नल राघव।
मार्निंग इंस्पेक्टर, कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।

कारण जानने के लिए राधादेवी के साथ-साथ राम-रहीम भी वहां पहुंचे।
कष्ट के लिये क्षमा चाहता हूं कर्नल साहब, दर-असल यह रुमाल हमें यहां तक खींच लाया है।
रूमाल! मैं कुछ समझा नहीं इंस्पेक्टर!
क्या बात है स्वामी?

राम को देखते ही दोनों कुत्ते उस पर झपटे!
यह सब क्या बदतमीजी है इंस्पेक्टर?
राम— बचो!

सॉरी कर्नल, मुझे अफसोस है, आपके पुत्र राम को अभी, इसी समय हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।
लेकिन क्यों?
क्या जुर्म किया है मेरे बेटे ने?
?

राम पर हत्या करने का सन्देह है।
हत्या! ये कैसे हो सकता है?
न---हीं---!

ठहरिये इंस्पेक्टर साहब, क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि मैंने किसकी और कहां हत्या की है?
आपने एक मासूम बच्चे की हत्या की है और उसकी लाश आपने भूतमहल में इसलिये टांग दी, ताकि पुलिस इस कांड में भी ड्राक्यूला बालक का हाथ समझे।

यह आप क्या बक रहे हैं इंस्पेक्टर! इसका क्या सुबूत है आपके पास?

सुबूत है यह रूमाल, जिसके कोने में आपके पुत्र के नाम राम का पहला अक्षर R कढ़ा हुआ है, जिसे सूंघकर ही कुत्ते यहां तक पहुंचे हैं और आप साक्षी हैं कि इन गूंगे जानवरों ने इस रूमाल के मालिक को पहचानने में कोई भूल नहीं की।

लेकिन इंस्पेक्टर, रूमाल के घटना स्थल पर मिलने से यह तो सिध्द नहीं हो जाता कि भूत-महल में मिलने वाले बच्चे की हत्या मैंने ही की होगी।

सारे सुबूत आपके खिलाफ हैं मिस्टर राम! बेहतर यही होगा कि आप हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलें। बाकी हत्या आपने की है अथवा नहीं, इसका फैसला अदालत करेगी।
यदि ऐसी बात है तो मैं आपके साथ चलने के लिये तैयार हूं।
मैं भी साथ चलूंगा।

नहीं-नहीं, मेरे बेटे को मत ले जाओ, मेरा बेटा खून नहीं कर सकता।
मम्मी, आप चिंता न करें। मैं शीघ्र ही प्रमाणित कर दूंगा कि हत्या मैंने नहीं की।

हां राधा, धैर्य से काम लो। कानून को अपना कर्तव्य पूरा करने दो। यदि राम वास्तव में निर्दोष है तो कानून उसके साथ पूरा इन्साफ करेगा।

जैसे ही वे लोग कोठी से बाहर निकले—।
हा-हा-हा-! आखिर फंस ही गया भूत-महल के चक्कर में।
ओह! यह तो वही पागल बूढ़ा है, जो हमें भूत-महल के गेट पर मिला था।

फिर इससे पहले कि राम-रहीम उस बूढ़े को रोकने की कोशिश करते, बूढ़ा हंसता हुआ वहां से भाग निकला।
हा-हा-हा-कोई नहीं बचेगा, कोई नहीं बचेगा। भूत-महल में जाने वाला कोई नहीं बचेगा।
कौन था यह? क्या तुम उसे जानते हो?
नहीं। कोई पागल लगता है।
राम ने जान-बूझकर ही असलियत छुपाये रखी।

इंस्पेक्टर देव राम-रहीम को लेकर पुलिस स्टेशन पहुंचा।
बैठो, लेकिन ध्यान रहे जो कुछ मैं पूछूं उसका ठीक-ठीक उत्तर मिलना चाहिये।
धन्यवाद! कानून की सहायता करके मुझे खुशी होगी। पूछिये, आप क्या पूछना चाहते हैं?
और मुझे भी!

परन्तु इससे पहले कि इंस्पेक्टर देव राम-रहीम से कुछ पूछताछ करता एक अधेड़, किन्तु रौबीले व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया।
गुड नून इंस्पेक्टर
कौन हैं आप, और बगैर इजाजत भीतर कैसे आये?
अरे! चीफ!
ओह! चीफ!

आने वाले व्यक्ति थे बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ मुखर्जी।
मुझे प्रभात मुखर्जी कहते हैं इंस्पेक्टर, और यह रहा मेरा आईडेन्टिटी कार्ड।
शुक्र है चीफ आ गये।

और परिचय कार्ड को देखते ही—
ओह! आप!
सॉरी सर! मैं अपने व्यवहार पर शर्मिन्दा हूं। कहिये, कैसे कष्ट किया आपने?
मैं इन दोनों को लेने आया हूं।

मुझे कोई आपत्ति नहीं सर, आप इन्हें ले जा सकते हैं।
गुड!
चलो—तुम दोनों मेरे साथ आओ, लेकिन ध्यान रहे, कोई चालाकी की तो हाथ-पैर तुड़वा बैठोगे।
मिस्टर मुखर्जी ने इंस्पेक्टर देव पर यह जाहिर नहीं होने दिया कि राम-रहीम उन्हीं के विभाग के डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ हैं।

पुलिस स्टेशन के बाहर मिस्टर मुखर्जी की कार मौजूद थी।
चुपचाप बैठ जाओ, इंस्पेक्टर देव की नजर हम पर है।

मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। काश! एक बार उनसे पूछताछ करने का मौका मिल जाता, तरक्की निश्चित हो जाती।

और मिस्टर मुखर्जी राम-रहीम को लेकर वहां से चल पड़े।
हां, अब बताओ क्या कहानी है?
वह तो बतायेंगे ही चीफ, लेकिन पहले आप यह बताइये कि हमारे पुलिस स्टेशन में होने के बारे में आपको कैसे जानकारी मिली?

इसे मात्र संयोग ही समझो, मैंने तुम्हारे घर फोन किया तो मालूम पड़ा कि तुम्हें किसी हत्या के आरोप में पुलिस ले गई है, तुम्हारे इलाके में यही थाना पड़ता था, लिहाजा मुझे वहां पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं हुई।
लेकिन आपने हमारी असलियत क्यों छुपाई?

ताकि अपराधी यह सोचकर संतुष्ट हो जाये कि तुम दोनों पुलिस के चक्कर में फंस गये हो।
हम्म! तो यह बात थी।
ओह!

फिर राम ने अब तक की सारी कहानी विस्तारपूर्वक सुना डाली और अंत में बोला—
लेकिन चीफ, यह मानना पड़ेगा कि यह कम्बख्त ड्राक्यूला बालक है गजब का फुर्तीला, हर बार बच-कर निकल जाता है। कल रात भी...!

इसका मतलब यह हुआ कि वह बालक वास्तव में ड्राक्यूला बालक के हाथों ही शिकार हुआ है।

बातचीत के दौरान ही कार सीक्रेट सर्विस के हेडक्वार्टर में कब प्रविष्ट हुई, इसका उन्हें ध्यान ही नहीं रहा।
बिल्कुल चीफ, इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं, हम भूतमहल गये थे और वहां से साफ बचकर निकल आये थे, तभी शायद वह हमें अपने लिये खतरा समझ, कल रात हमें खत्म करने आया था, संयोग से हम बच गये--वरना...
तब एक बात स्पष्ट है कि ड्राक्यूला बालक भूत-महल में ही रहता है और प्रकाश उसके लिये असहनीय है।

मेरे विचार से अब तुम दोनों को बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है। ड्राक्यूला बालक दोबारा भी तुम पर आक्रमण कर सकता है।
जी हां, आप ठीक कहते हैं।
?

जल्दी ही वे इमारत के भीतर एक सुन्दर सजे-सजाये आफिस में पहुंचे।
आप हमें यहां क्यों ले आये चीफ?
बैठो— अभी मालूम हो जायेगा।

चीफ मुखर्जी ने एक तरफ रखी अलमारी खोली।
मैं तुम्हें एक विशेष चीज देने यहां लाया हूं।
पता नहीं क्या चीज देना चाहते हैं।
वे तो उसमें से कपड़े निकाल रहे हैं।

चीफ मुखर्जी ने अलमारी से दो जोड़ी कपड़ों के निकाले।
ये बुलेट प्रूफ कपड़े हैं, इन्हें पहनने के पश्चात न तो तुम पर गोलियां ही असर करेंगी और न ही ड्राक्यूला बालक के कील जैसे नाखून व शरीर के कांटे ही तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकेंगे।
निःसंदेह चीफ, ये कपड़े हमारे लिये बहुत ही उपयोगी सिध्द होंगे।
वाह!

अब यह केस तुम दोनों के सुपुर्द है राम, तुम्हें ड्राक्यूला बालक के आतंक को जल्द से जल्द खत्म करना है।
लेकिन यह हत्या का मामला– मेरी गिरफ्तारी के बारे में आप उच्चाधिकारियों को क्या जवाब देंगे?

उसकी तुम चिन्ता न करो, सबकुछ मुझ पर छोड़ दो और निश्चिंतता से अपना काम करो।
ओ.के. चीफ! हमें इजाजत दीजिये।

उधर, लगभग आधी रात को कब्रिस्तान में_
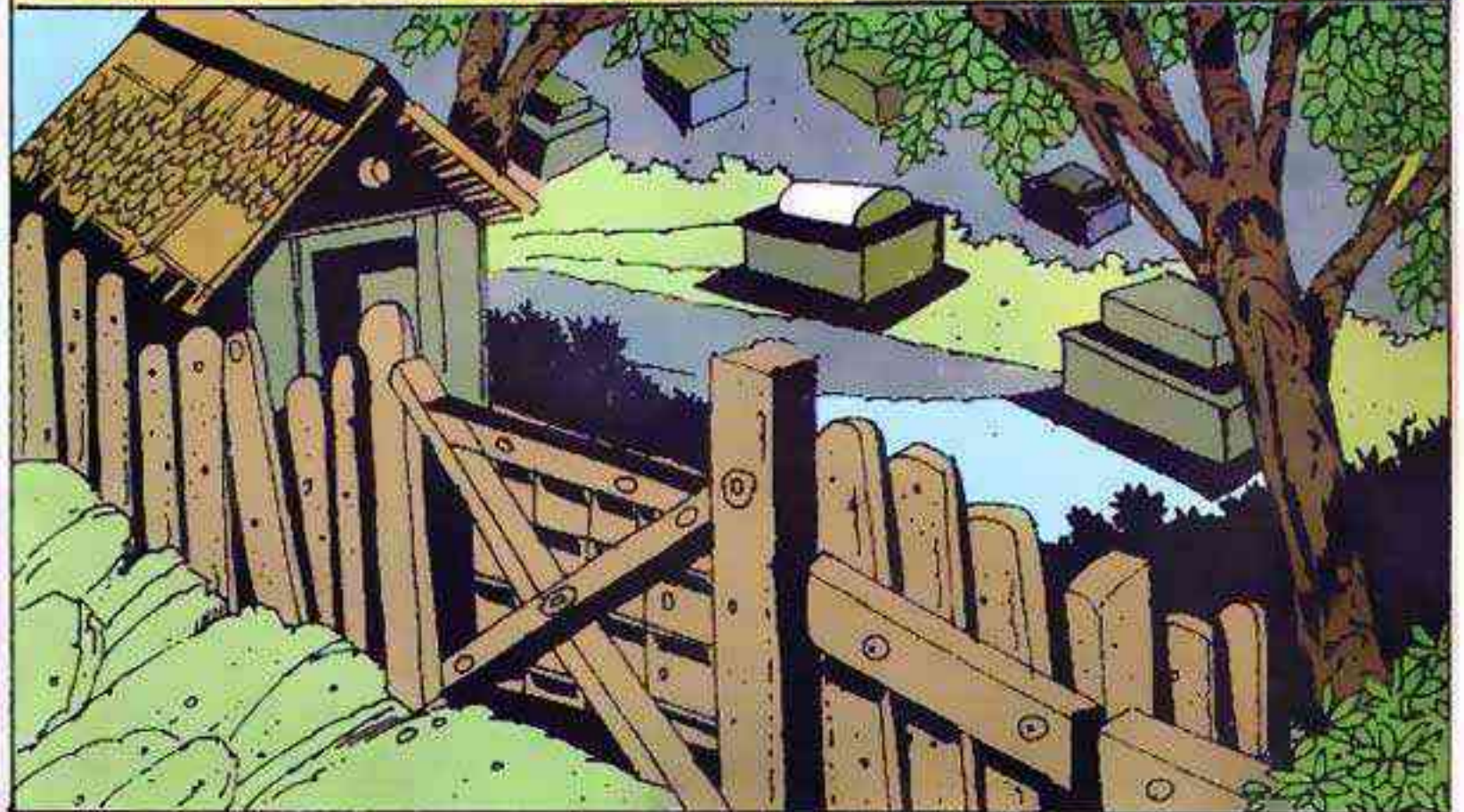
काले रंग की एक बड़ी-सी गाड़ी आकर रुकी।
जल्दी उतरो।

गाड़ी से कुछ भूत-प्रेतो जैसे सफेद पोश और ड्राक्यूला बालक बाहर निकले।
भीतर पहुंचो और सभी ताजी गड़ी लाशों को खोद निकालो, जल्दी।
जो आज्ञा।

सफेद पोश कंकालों ने द्वार खोला।

द्वार खुलने की आवाज सुनकर भीतर बैठा चौकीदार चौंका।
कौन हो सकता है? शायद फिर कोई नया मुर्दा!

फिर टार्च संभालकर चौकीदार द्वार की ओर बढ़ा। तभी—
क... कौन? भूत!

सफेद पोशों ने जैसे ही अपने भयानक हाथ चौकीदार की गर्दन की ओर बढ़ाये। भयभीत चौकीदार ने भागना चाहा।
न.. नहीं! बचाओ..

परंतु वह भाग नहीं सका।
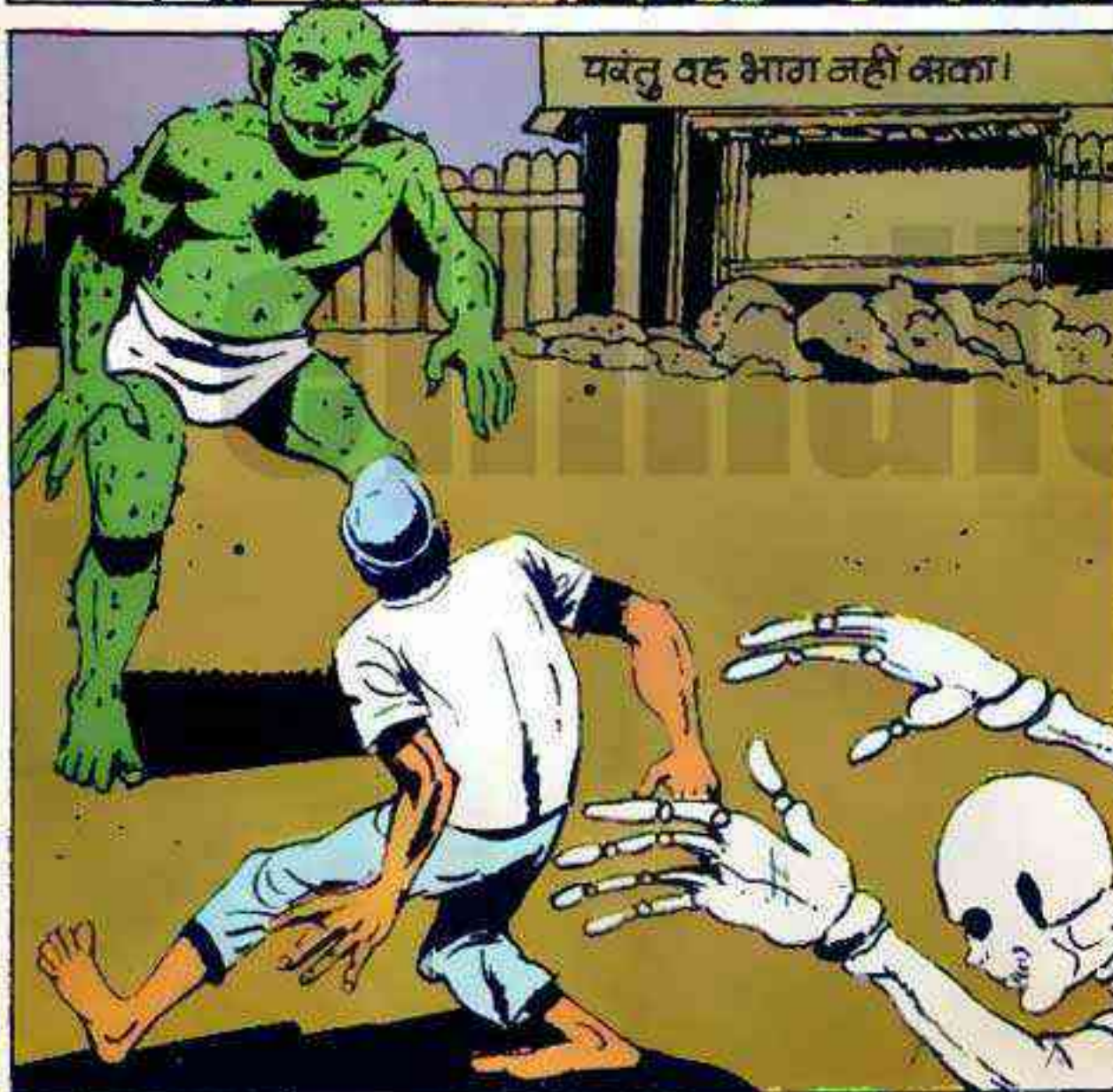
ड्राक्यूला बालक ने अपने भयानक पंजों से उसकी गर्दन दबोच ली और अपने पैने दांत उसकी गर्दन पर टिकाकर उसका खून चूसने लगा।
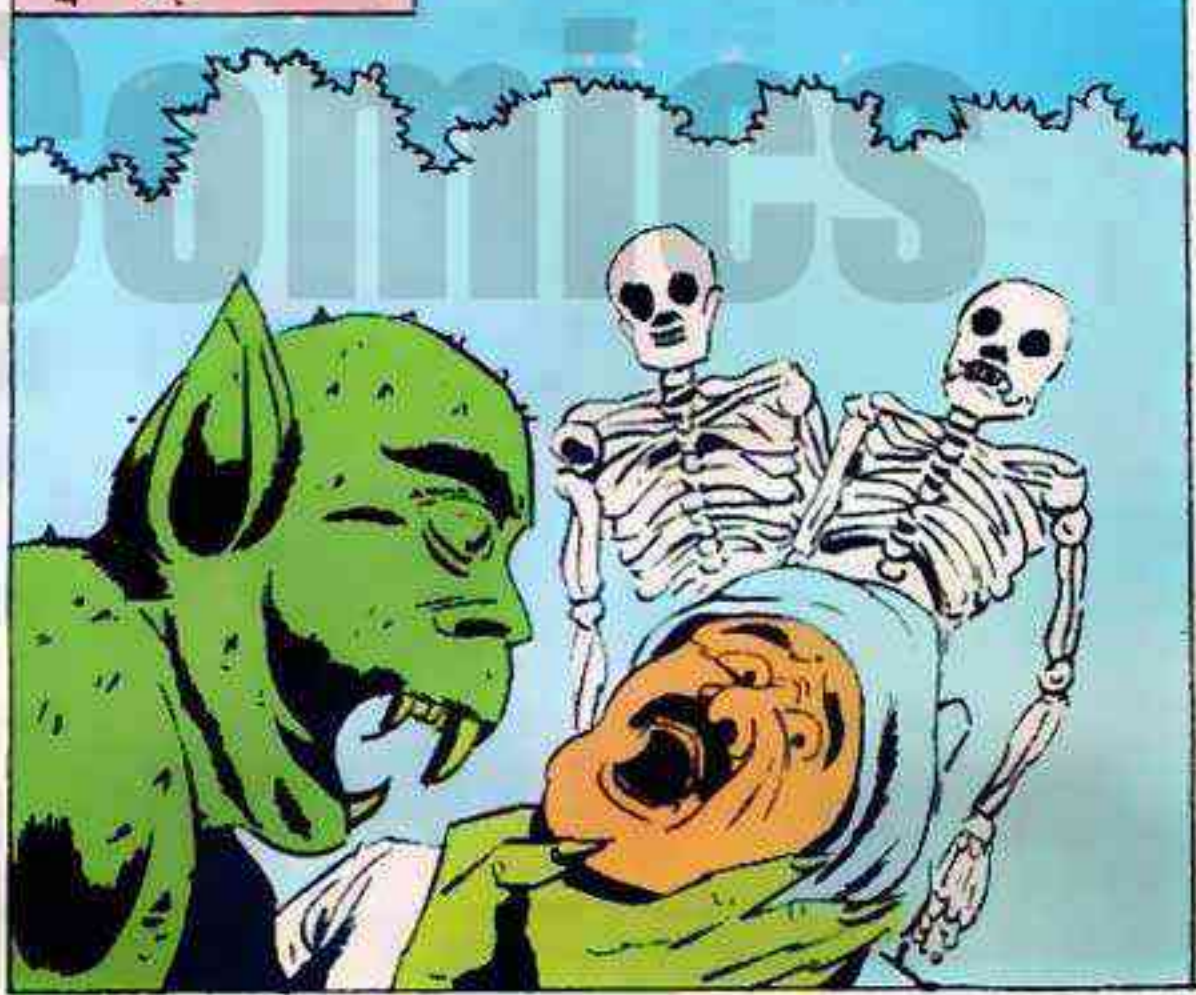
और जब वह चौकीदार का खून चूस चुका—
चलो, जल्दी अपना काम पूरा करो-तब तक मैं इसे गाड़ी तक पहुंचाता हूं।
ठीक है ड्राक्यूला!

चलो, जल्दी से सारी ताजी कब्रें खोद डालो।

सभी सफेद पोश ताजी-ताजी कब्रों को खोदने में जुट गये—
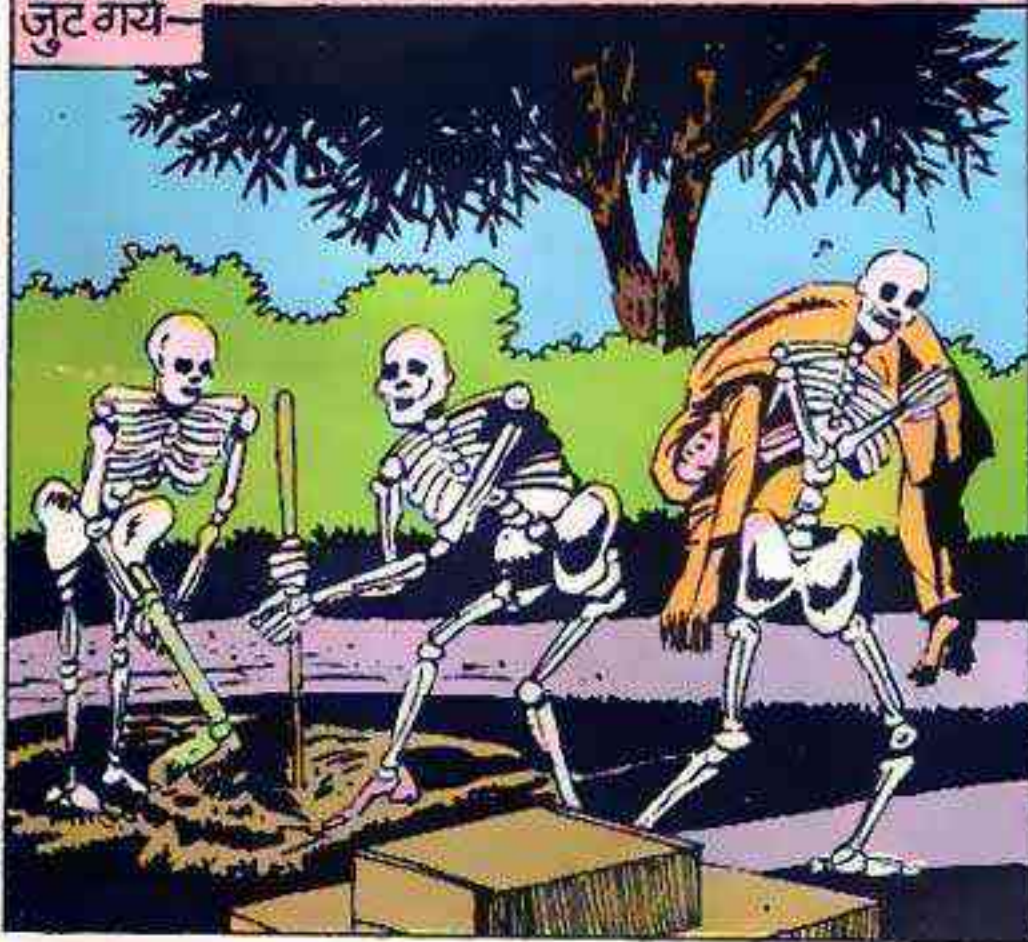
कुछ समय पश्चात—
सारी ताजा लाशें हमने निकाल ली हैं।
जल्दी करो, लाशों को पिछले हिस्से में डालो और निकल चलो यहां से। स्वामी हमारा इंतजार कर रहे होंगे।
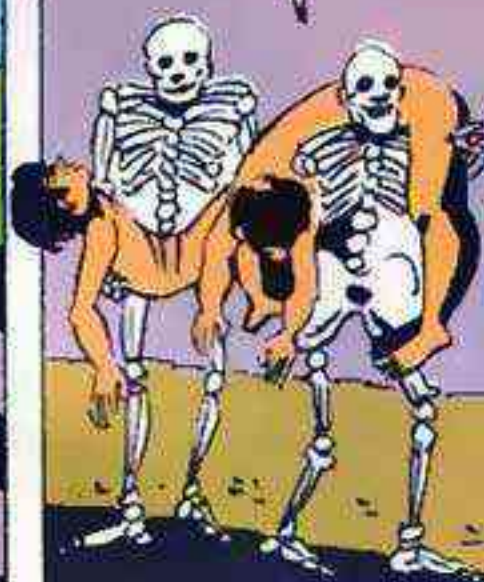
ड्राईवर गाड़ी सीधे भूत-महल के पिछले हिस्से की ओर ले चलो, हम सुरंग के रास्ते भूत-महल में प्रविष्ट होंगे, सामने से जाने में खतरा हो सकता है।
जो आज्ञा ड्राक्यूला!

जल्दी ही गाड़ी भूत-महल के पिछवाड़े के जंगल में जाकर रुकी और—
मेरे पीछे आओ!

भूत-महल तक पहुंचने का दूसरा गुप्त रास्ता।
चले आओ— अंतिम व्यक्ति नीचे उतरने के बाद द्वार बन्द कर दे।

जब वे लोग सुरंग के रास्ते भूत-महल के एक अण्डरग्राउंड तहखाने में पहुंचे—
मुर्दे ले आये, शाबाश! अब ये मेरी कंकाल सेना में शामिल हो जायेंगे। उसके बाद— हा—हा—हा—!

अगले दिन देश के तमाम समाचार-पत्र विभिन्न कब्रिस्तानों व शवगृहों से रहस्यमय ढंग से लाशों के गायब होने की खबरों से भरे पड़े थे।
समझ में नहीं आता कि यह सब क्या चक्कर है। भला लाशें चुराने से क्या फायदा पहुंच सकता है अपराधियों को।
अवश्य ही इसमें भी कोई गहरा राज़ है।

क्या तुम इन लाशों की चोरी के पीछे भी ड्राक्यूला बालक का हाथ समझ रहे हो?
फिलहाल कुछ नहीं कहा जा सकता।
ओह फोन!
ट्री...ट्री...ट्री

हैल्लो- मैं राम बोल रहा हूं।
यस सर!
मैं चीफ मुखर्जी, तुरंत रहीम के साथ ऑफिस पहुंचो।

किसका फोन था राम?
ओह!
चीफ मुखर्जी का, चाय खत्म करके फटाफट तैयार हो जाओ, चीफ ने हमें बुलाया है।

कुछ देर बाद सीक्रेट सर्विस के ऑफिस में-
राम, अब यह केस भयानक रूख पकड़ता जा रहा है, अपराधी शीघ्र से शीघ्र पकड़ा जाना चाहिये, वरना लोगों का विश्वास पुलिस से उठ जायेगा।
हम पूरी कोशिश कर रहे हैं चीफ, वैसे मैं अब कुछ और सोचने पर विवश हो गया हूं।

वह क्या ?
न जाने क्यों चीफ इस घटना से मुझे ऐसा लग रहा है कि ड्राक्यूला बालक के पीछे किसी और ही सुलझे हुए व्यक्ति का दिमाग काम कर रहा है, जो अपराधी प्रवृति का मालूम पड़ता है।

यदि ऐसा हुआ तो हमें आनेवाली किसी नई मुसीबत का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये।
बिल्कुल – मैं भी यही कहने जा रहा था। लाशों की चोरी अवश्य ही किसी भयानक उद्देश्य के कारण की गई होगी, वरना लाशों से भला किसी को क्या फायदा पहुंच सकता है ?

जो भी हो राम, तुम्हें अब जल्द से जल्द इस केस को निपटाना होगा. चाहे इस सारे कांड के पीछे ड्राक्यूला बालक का हाथ हो अथवा किसी और का।
आप चिंता न करें चीफ, जिस दिन ड्राक्यूला बालक हमें दिखाई दे गया, वह दिन इस केस का आखिरी दिन होगा। अब हमें इजाजत दीजिये

लाशों की चोरी को लेकर पुलिस विभाग में भी हंगामा मचा हुआ था।
शहर में इतना हंगामा मचा हुआ है। जनता पुलिस की नाकामयाबी पर कीचड़ उछाल रही है और आप लोग हैं कि हाथ पर हाथ रखे अभी केवल तमाशा ही देख रहे हैं। मैं पूछता हूं कि अभी तक अपराधी पकड़ा क्यों नहीं गया ?
सर, हमें संदेह है कि लाशों की चोरी के पीछे भी ड्राक्यूला बालक का ही हाथ है। इस बात के प्रमाण हमें कुछ कब्रिस्तानों से मिले हैं।

ड्राक्यूला बालक – ड्राक्यूला बालक! आप लोगों के पास सिर्फ एक ही बहाना रह गया है, लेकिन मैं अब कोई बहाना नहीं सुनना चाहता। अपराधी जो कोई भी है, वह जल्द से जल्द पकड़ा जाना चाहिये।
लेकिन सर, वह एक भूत है। उसे पकड़ना इंसान के बस की बात नहीं।

बकवास! भूत-प्रेत लाशों की चोरी नहीं कर सकते–वह कोई शैतान इंसान ही है, जो अपने को भूत-प्रेत साबित करने की कोशिश कर रहा है–यह मेरा आदेश है कि वह एक सप्ताह के भीतर-भीतर पकड़ा जाना चाहिये।

और हां, शहर के चप्पे-चप्पे पर गश्त बढ़ा दो।

यस सर!

और उधर भूत महल में डॉक्टर शैतान कंकालों की एक पूरी सेना तैयार कर चुका था।

हा...हा...हा...! देखो ड्राक्यूला, मेरे कंकालों की सेना तैयार हो गयी, अब मैं पूरी दुनिया में तहलका मचा दूंगा।
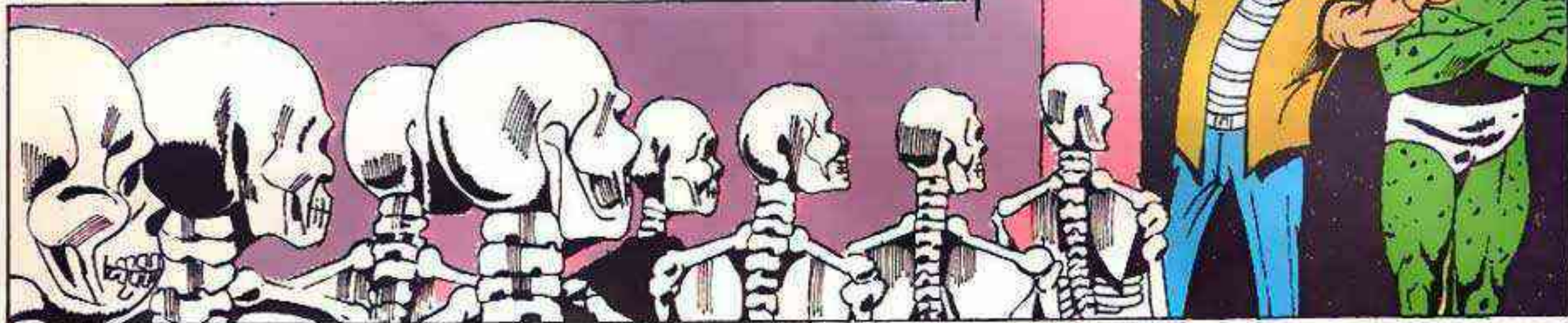
हमारे लिये क्या आज्ञा है स्वामी?

उड़ते हुए कंकाल एक बैंक के सामने पहुंचे।
भागो!
भूत!

भागो-भागो!
ठहरो! भागो मत, ये भूत-वूत कुछ नहीं, किसी अपराधी का वैज्ञानिक चमत्कार है। शायद ये बैंक लूटना चाहते हैं। पोजीशन ले लो।

आफिसर के आदेश पर सिपाहियों ने हवा में उड़ते कंकालों पर फायरिंग करनी आरंभ कर दी।
फायर!

परंतु गोलियों का उन कंकालों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा
हा-हा-हा-! ही-ही-ही!

ओह! इन पर तो गोलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा।

सिपाही भयभीत हो उठे।
सर, ये वास्तव में भूत हैं, भागिये।
हम भूतों का मुकाबला नहीं कर सकते सर!
भागो!
ठहरो-डरो नहीं, एक बार फिर कोशिश करो।

तभी कंकालों ने भागते सिपाहियों पर आक्रमण किया-
आ..ई..ई..!
उफ!
हाय मरा!

एक कंकाल पुलिस ऑफिसर की ओर बढ़ा।
हा..हा..हा..!
हे प्रभु! रक्षा करना!

और फिर—
ह्.. हा...हा..!
आ.. .ई..ऊ..!

उसके बाद—
चलो... अब देर न करो, भीतर घुसो और सारा धन समेट लो।
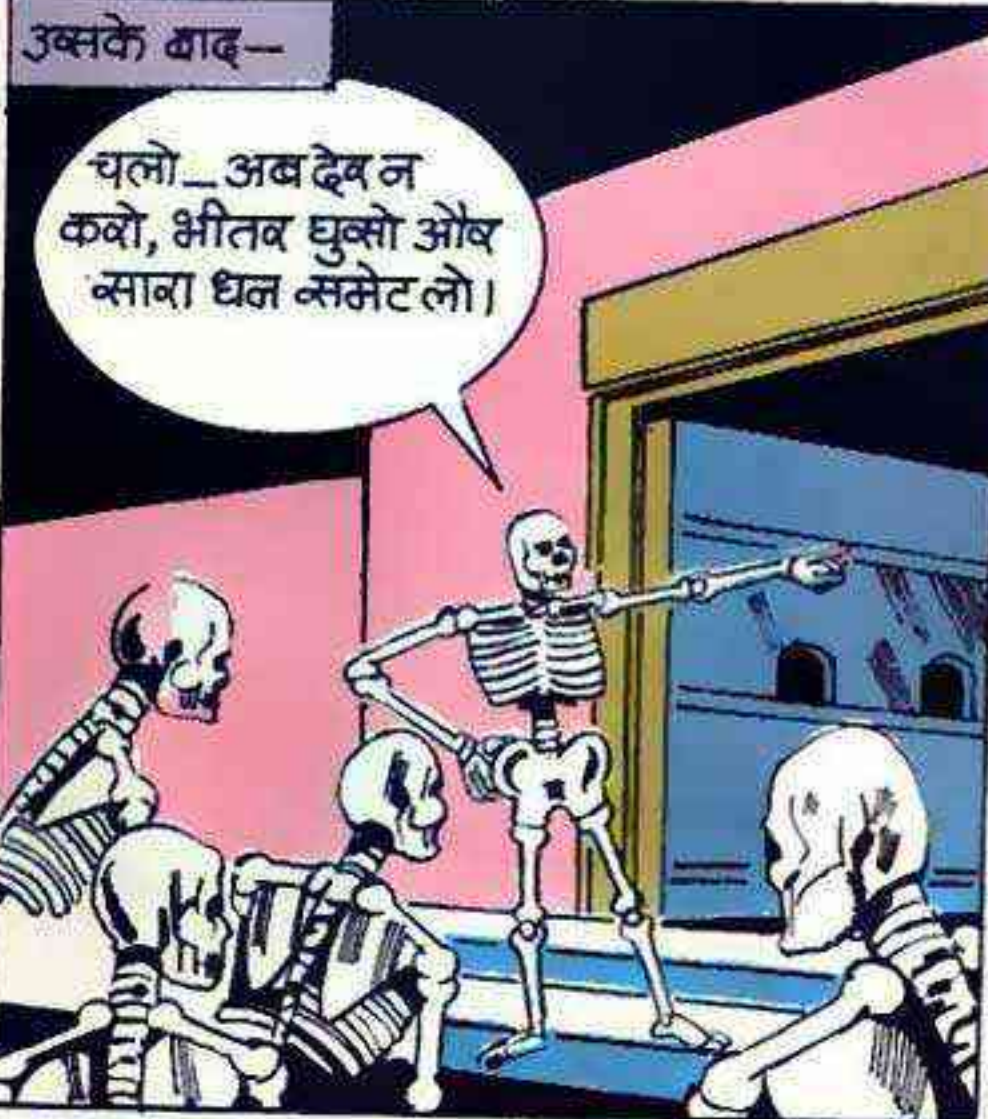
बैंक के भीतर प्रविष्ट हो उन कंकालों ने बड़े-बड़े थैलों में तिजोरियों का माल भरना आरंभ कर दिया।
जल्दी करो, लेकिन माल बचना नहीं चाहिये। स्वामी को धन की बहुत जरूरत है।
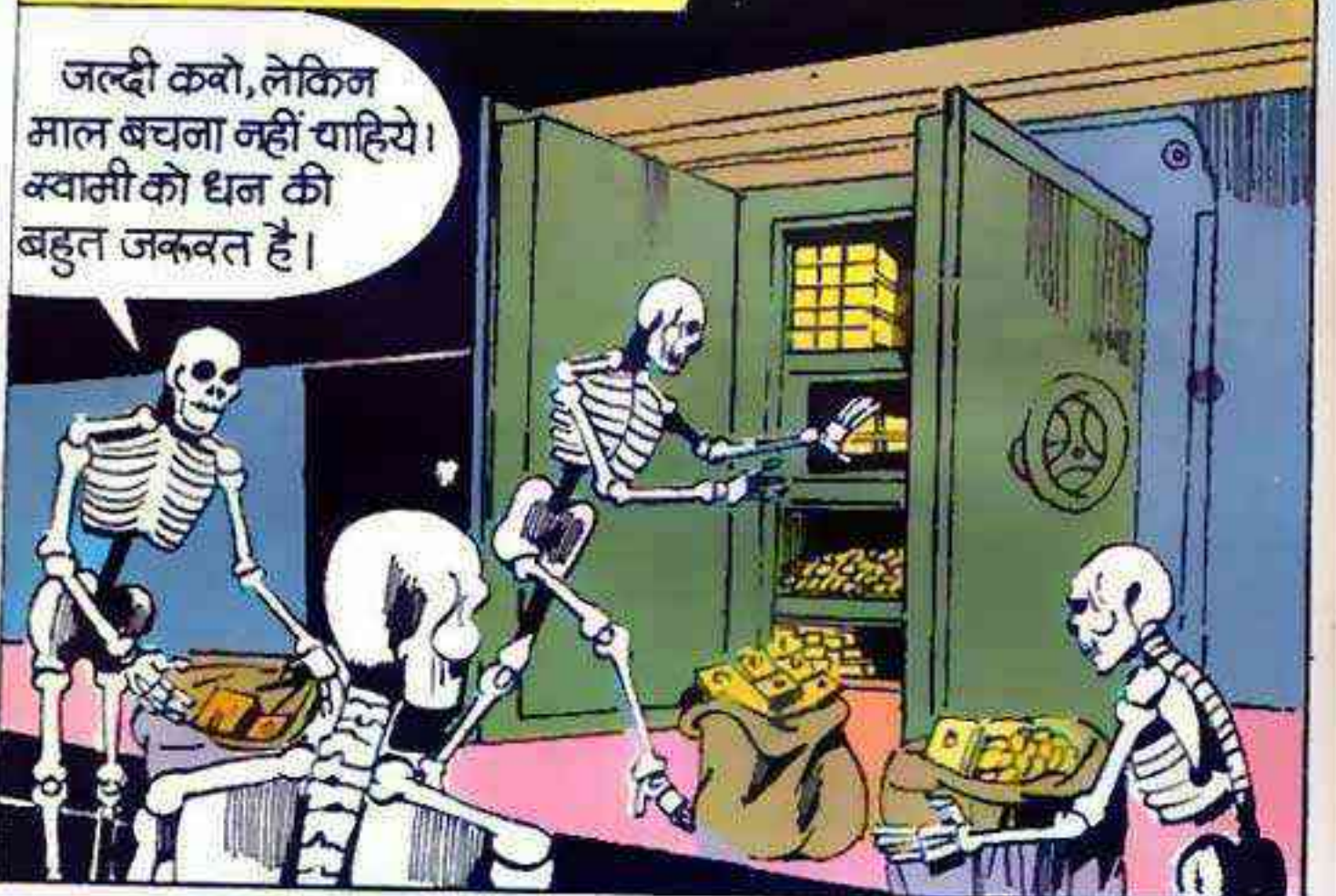
कंकालों का एक दूसरा दल शहर के प्रसिद्ध जौहरी बाजार में पहुंचा।

कंकालों ने जौहरी बाजार को लूटना शुरू किया—
ओह अद्भुत! स्वामी इन्हें देखकर प्रसन्न होंगे।
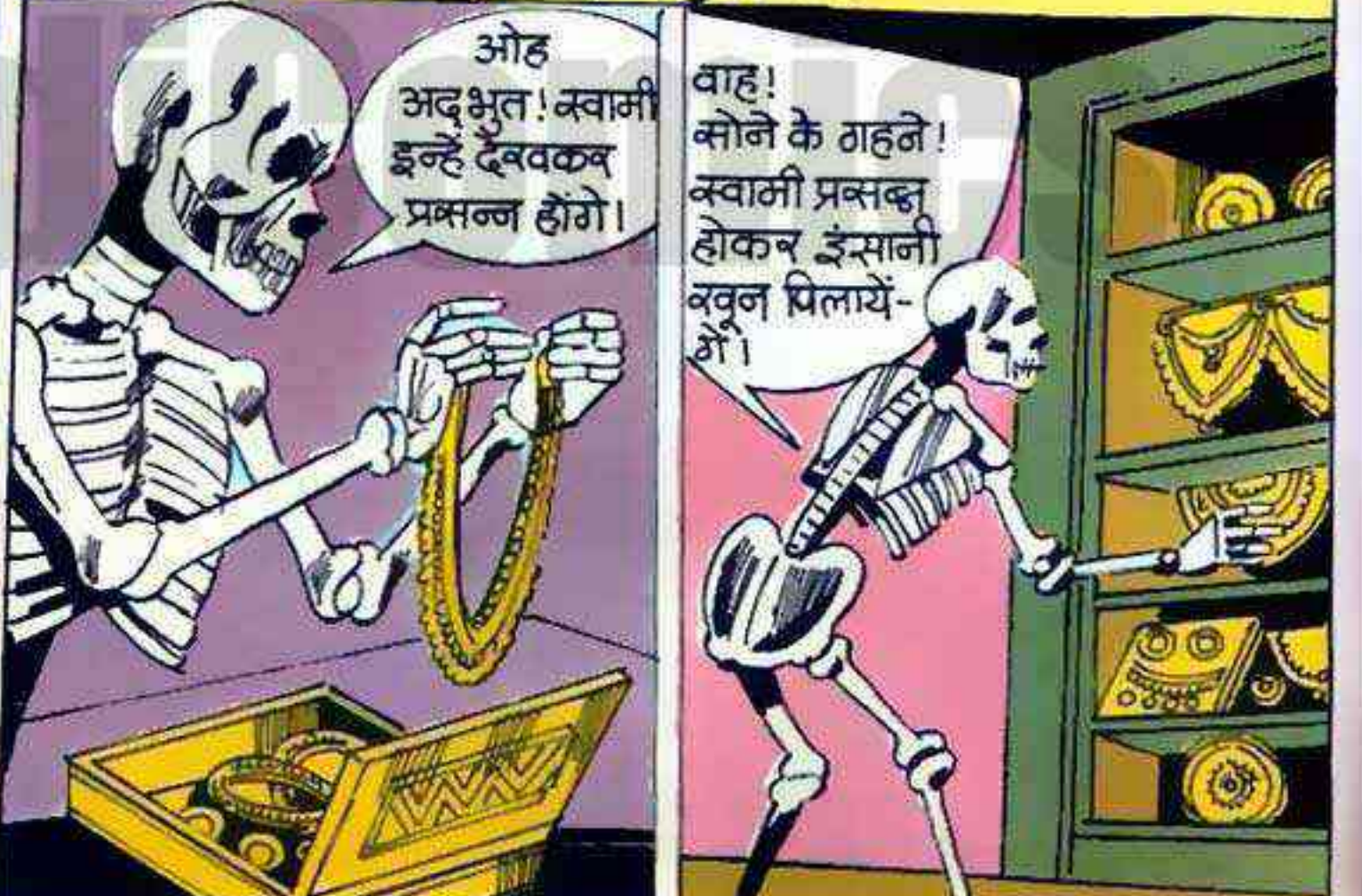
वाह! सोने के गहने! स्वामी प्रसन्न होकर इंसानी खून पिलायें-गें।

कुछ कंकाल राम-रहीम की कोठी पर भी पहुंचे।

दोनों कंकाल राम-रहीम के शयन कक्ष की खिड़की के निकट पहुंचे।

खिड़की का शीशा तोड़कर उन्होंने खिड़की खोली और—
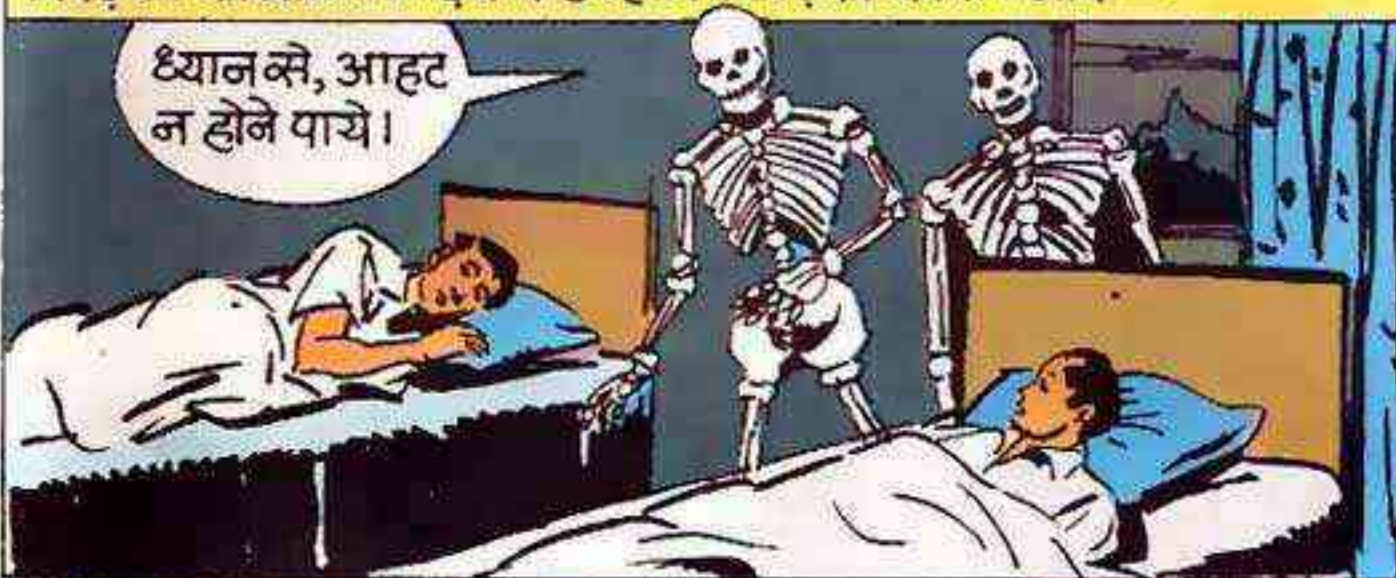
परन्तु दूसरे कंकाल के कूदने से हुई मद्धमसी आहट से ही राम की आंखें खुल गयीं।

राम ने बिजली की-सी फुर्ती के साथ अपना रिवाल्वर निकालकर उन दोनों कंकालों पर फायर किया।

लेकिन कंकालों पर गोलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

फिर खाली रिवाल्वर फैंककर राम ने उन पर छलांग लगाई।

आह! ये तो फौलाद के बने लगते हैं।
हो...हो...हो...! हू...हू...हू...!
लेकिन कंकालों को घूंसा मारते ही राम को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसका हाथ किसी पत्थर से टकराया हो।

तभी दोनों कंकालों ने उस पर आक्रमण किया—
आह!

फिर दोनों कंकाल भयानक अंदाज में राम की ओर बढ़े, तभी खामोश खड़े रहीम को जैसे होश आया—
आगे मत बढ़ना, वरना गोली मार दूंगा।
ह...ह...ह...कोई फायदा नहीं होगा, गोलियां हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।
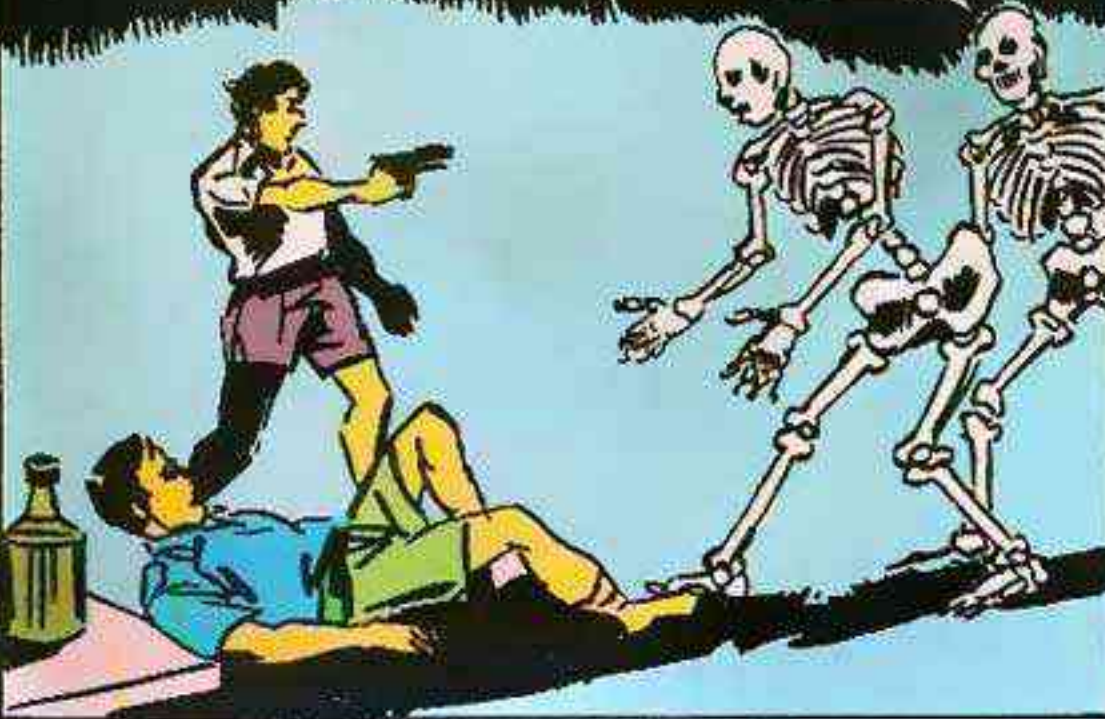
पेट्रोल की बोतल, शायद कुछ काम दे जाए।

फिर जैसे ही एक कंकाल रहीम की ओर बढ़ा और दूसरा राम को उठाने झुका—

राम को उठाने वाला कंकाल पेट्रोल से सराबोर हो गया और ठीक उसी समय राम को खतरे में समझ रहीम ने फुर्ती से पलटकर उस पर फायर झोंक दिया।
मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा।

परिणाम आश्चर्यजनक निकला—

अपने साथी का यह हश्र देख दूसरे कंकाल ने भयभीत हो खिड़की की ओर छलांग लगाई।
राम, वह भाग रहा है! पकड़ो उसे!
ठीक है, मैं उसके पीछे जा रहा हूं, तुम यहीं रहना।

दूसरे कंकाल के पीछे-पीछे राम ने खिड़की से छलांग लगाई, लेकिन जैसे ही वह दूसरी ओर पहुंचा —
आह!

राम पर वार करने वाले कंकाल के अन्य साथी थे।
तुम दो इसे लेकर स्वामी के पास पहुंचो, बाकी मेरे साथ आओ।
बहुत अच्छा।

इधर कमरे के भीतर —
हे भगवान! यह क्या?
क्या बात है बेटा?
मैं कुछ नहीं जानता अंकल, सिवाय इसके कि यह कंकाल मानव हमें मारने आये थे, राम इसके दूसरे साथी के पीछे गया है।

तभी —
खबरदार! अपने स्थान से हिलने की कोशिश मत करना, वरना मारे जाओगे!
अ..ई..ई.!

यदि अपनी जान की खैर चाहते हो तो तुम सब चुप-चाप हमारे साथ चलो, राम हमारी कैद में पहुंच चुका है।
कोई चारा नहीं। अब तो इनके साथ जाना ही होगा।
क्या?
कोई चारा न देख कर्नल राघव, राधादेवी और रहीम ने स्वयं को उनके हवाले कर दिया।

उसी रात बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ मिस्टर मुखर्जी की कोठी में—
क...कौन हो तुम? और क्या चाहते हो?
यदि अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप हमारे साथ चलो।
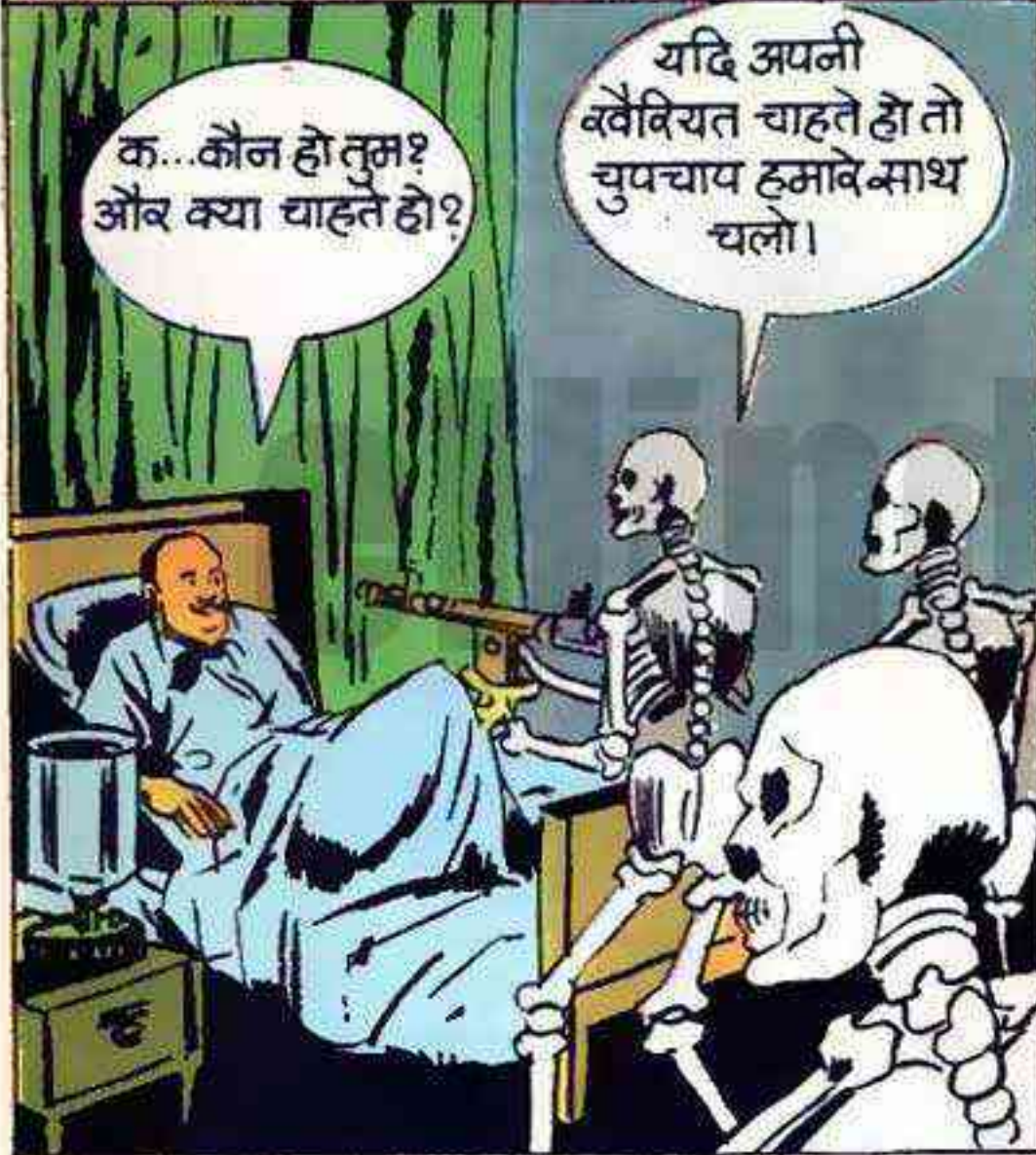
उधर भूत-महल में—
हम सफल रहे स्वामी, पूरे शहर की दौलत आपके कदमों में है।
हा...हा...हा...! शाबाश मेरे गुलामो, आज मैं तुम्हें जी भरकर इंसानी खून पिलाऊंगा

तभी एक अन्य कंकाल भीतर प्रविष्ट हुआ—
स्वामी की जय हो! हम आपके सारे दुश्मनों को पकड़ लाये।
शाबाश! वास्तव में आज की रात हमारे लिये बहुत ही शुभ है।
इन्हें बांध दो, मैं अभी आता हूं।

जब राम को होश आया—
राम, तुम ठीक तो हो न?

मैं बिल्कुल ठीक हूं, आप लोग मेरी चिंता न कीजिये और यह बताइये कि हम इस समय कहां और किसकी कैद में हैं?
विश्वास के साथ तो कुछ नहीं कहा जा सकता राम, क्योंकि कंकाल हमारी आंखों पर पट्टी बांधकर यहां तक लाये हैं, लेकिन फिर भी अंदाजा है कि हम भूत-महल के ही किसी अंडरग्राऊंड तहखाने में हैं।

उसी समय डॉक्टर शैतान ड्राक्यूला बालक और कुछ कंकालों के साथ हाल में प्रविष्ट हुआ।
महान स्वामी जिंदाबाद।

हा...हा...हा...! आखिर तुम सब फंस ही गये।

हुम्म! तो मेरा संदेह ठीक ही निकला। ड्रैक्यूला बालक के पीछे इसी शैतान इंसान का दिमाग काम कर रहा था और इसी ने लाशों को गायब करके कंकालों की फौज तैयार की है। अवश्य ही यह कोई खतरनाक एवं पागल वैज्ञानिक है, अब समझा।

तुमने हमें क्यों कैद किया है?
इस दुनिया को तबाह करने की तैयारी कर रहा हूं --और आधी तैयारी पूरी भी कर चुका हूं।

दुनिया को तबाह करने से तुम्हें क्या मिलेगा?
क्या मिलेगा? हा...हा...हा...! मेरा प्रतिशोध पूरा हो जायेगा, मेरी आत्मा को शांति मिल जायेगी।

मेरा नाम डॉक्टर शंकर है। कभी मैं भी भोला-भाला और नेक दिल सुन्दर इंसान था, मेरे छोटे से परिवार में मेरी बीवी और एक मात्र पुत्र था, उस समय मैं एक सरकारी प्रयोगशाला में नौकरी करता था। लेकिन इस दुनिया को मेरी खुशियां रास नहीं आईं, मेरे कुछ दुश्मनों ने मुझे एक झूठे इल्जाम में तीन साल के लिये जेल भिजवा दिया।

हे ईश्वर! तुम तो जानते हो मैं बेकसूर हूं।

जेल से छूटकर जब मैं घर वापस लौटा तो मेरी दुनिया उजड़ चुकी थी। इसी दुनिया के कुछ सरमायेदारों ने मेरी पत्नी की इज्जत लूट ली थी, जिसके कारण उसने आत्महत्या कर ली थी।
हे ईश्वर, यह तू मुझे किस गुनाह की सजा दे रहा है?

मैंने सीने पर पत्थर रखकर वह दुःख भी झेला, लेकिन एक दिन—
डॉक्टर साहब, क्या हुआ मेरे बेटे को?
इसे कैंसर है। इलाज करने में काफी पैसा लगेगा।

मैंने डॉक्टर के लाख हाथ-पैर जोड़े, लेकिन उसका दिल नहीं पसीजा।

मेरे बेटे को बचा लीजिये डॉक्टर साहब, मैं आपकी पाई-पाई चुका दूंगा।
केवल बातों से इलाज नहीं होता शंकर, यदि अपने बेटे की जिंदगी चाहते हो तो फीस का इंतजाम करो।

और फिर एक दिन बिना इलाज और दवादारू के मेरे बेटे ने दम तोड़ दिया।
मेरे बेटे—मेरे लाल, मुझ गरीब को माफ कर दे। मैं तुझे बचा नहीं सका।

मैंने बेटे की मौत भी सीने पर पत्थर रखकर झेल ली—और एक नयी नौकरी पर लग गया।
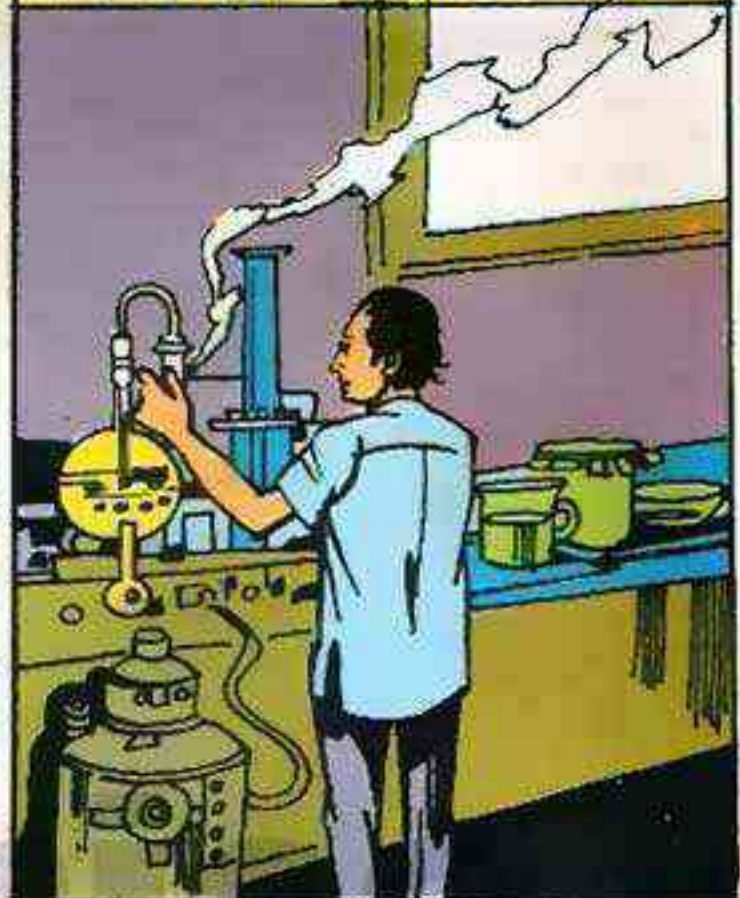
एक दिन मैं एक भयानक दुर्घटना का शिकार हो गया।

जब मुझे हॉस्पिटल में होश आया तो मैं दुनिया का सबसे बदसूरत इंसान था।
नहीं... हे ईश्वर! तुमने मुझे मार ही क्यों न दिया।
धैर्य से काम लो मिस्टर शंकर।

और दुनिया के दिये हुये जख्मों से मेरा दिल पत्थर हो उठा। डॉक्टर शंकर एक इंसान से डॉक्टर शैतान बनकर एक हैवान बन गया। मेरे दिल में प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठी।

एक दिन मैं खून के आंसू बहाता भटकता हुआ इस पुराने महल में पहुंच गया और यहीं रहने लगा।
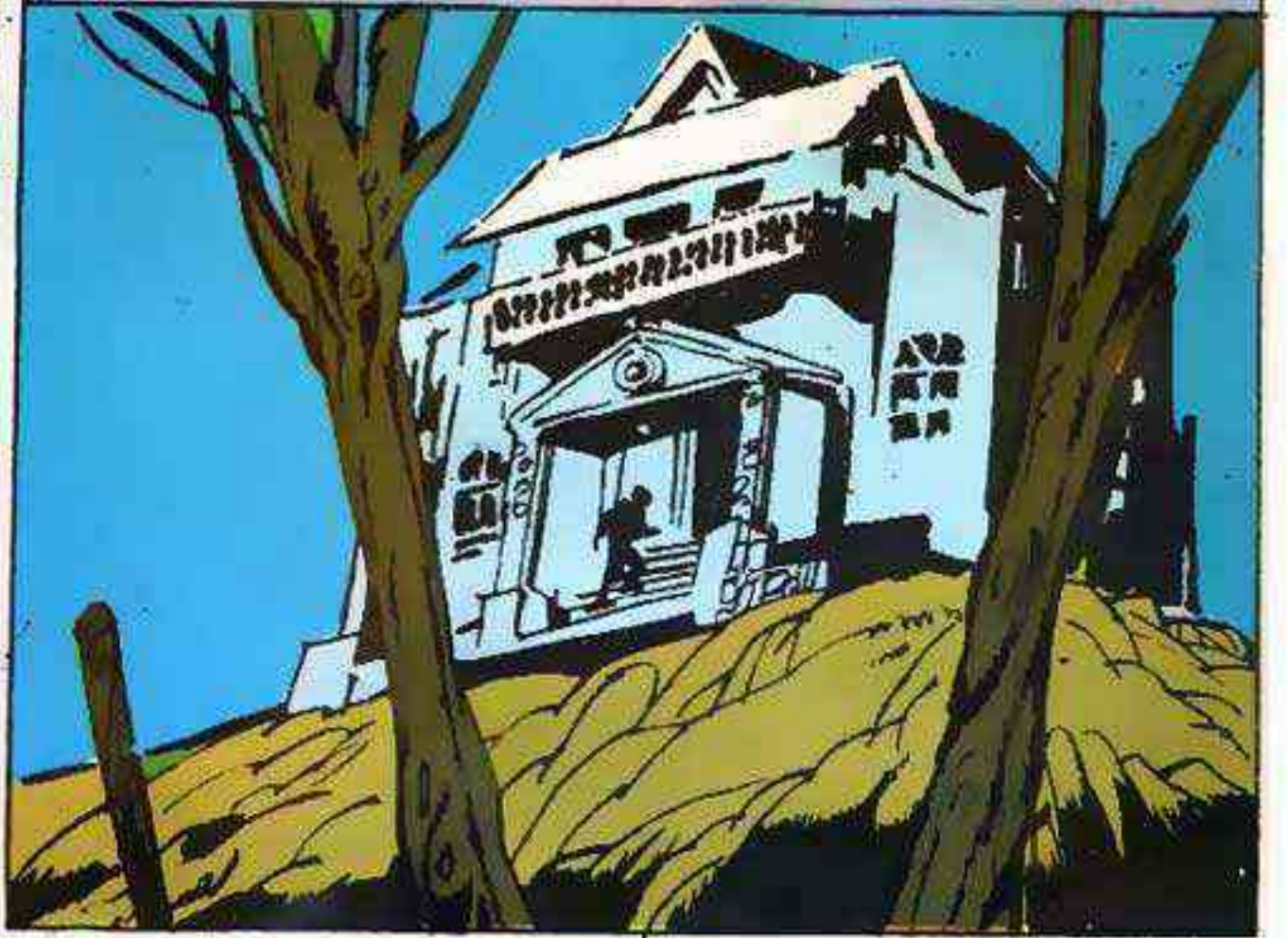
एक दिन महल के भीतर घूमते-घूमते मुझे यहां के अंडरग्राउंड गुप्त तहखानों का पता चल गया।

और मैंने किसी तरह पैसा जोड़ जोड़कर एक प्रयोगशाला कायम कर ली।

प्रयोगशाला तैयार होने के पश्चात् मैंने सर्वप्रथम ड्राक्यूला बालक की उत्पत्ति की और बच्चों का दुश्मन बनकर पूरे शहर में हंगामा मचा दिया और मैं अब सबसे गिन-गिन कर बदले ले रहा हूं। मैं तुम्हें भी जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।

ड्राक्यूला जाओ, सबसे पहले राम का खून पीकर अपनी भूख शांत करो।

आदेश मिलते ही ड्राक्यूला बालक अपनी लाल-लाल जीभ लपलपाता हुआ राम की ओर बढ़ा—

लेकिन इससे पहले कि ड्राक्यूला बालक राम की गर्दन में अपने पैने दांत गड़ा पाता, द्वार से एक चमकदार किरण आयी और ड्राक्यूला बालक की छाती में समा गयी।
आ-- आ---!

अगले ही पल उसका शरीर जल उठा। और जलकर राख हो गया।
आ.. ई.. ई..! स्वामी मुझे बचाओ।

सबकी दृष्टि द्वार की ओर घूम गयी।
पागल बूढ़ा !
ओह! यह तो वही रहस्यमय बूढ़ा है।

खबरदार! भागने की कोशिश मत करना, वरना मारे जाओगे। कौन हो तुम?

पागल बूढ़े ने अपने चेहरे से मेकअप हटाया।
तुम्हारा खेल अब खत्म हो चुका है शंकर, भलाई इसी में है कि तुम स्वयं को कानून के हवाले कर दो।

दूसरे ही क्षण जो चेहरा सामने आया उसे देखकर डॉक्टर शंकर उर्फ डॉक्टर शैतान बुरी तरह चौंक उठा।
ओह! गुरुदेव तुम!
खामोश नीच! गुरु का नाम अपने गंदे मुंह से मत ले।

जिस दिन मुझे ड्राक्यूला बालक के आतंक के विषय में मालूम हुआ था, उसी दिन मुझे विश्वास हो गया था कि यह इसी का काम है। उस दवाई का फार्मूला मैंने ही इसे दिया था, यही नहीं इन कंकालों की ईजाद भी मैंने ही की थी। मैं इसकी तलाश में काफी समय से लगा था, लेकिन चूंकि मुझे भूत-महल के गुप्त तहखानों के बारे में जानकारी नहीं थी, इसीलिये बूढ़े पागल के रूप में मैं यहां की निगरानी कर रहा था। तुम लोग नाहक ही इसके हाथों मारे न जाओ, इसलिये मैंने शुरू-शुरू में तुम्हें रोकने की भी चेष्टा की थी।

ओह!

सबकुछ बताने के पश्चात जब प्रोफेसर दिवाकर खामोश हुए तो डॉक्टर शैतान भयानक अट्टाहास कर उठा।

हा... हा... हा...! चलो अच्छा ही हुआ प्रोफेसर कि तुम स्वयं यहां आ गये। तुम्हें भी इनके साथ मौत के घाट उतारकर मैं हमेशा-हमेशा के लिए अपना राजदार यहीं दफन कर दूंगा।

अपने कंकालों को आग में जलकर भस्म होते देखकर डॉक्टर शैतान एकाएक बुरी तरह भयभीत हो उठा।

डा.शैतान को निशाने पर रखते हुए प्रो.दिवाकर ने राम-रहीम, कर्नल राघव, चीफ मुखर्जी आदि सभी को आजाद कर दिया।
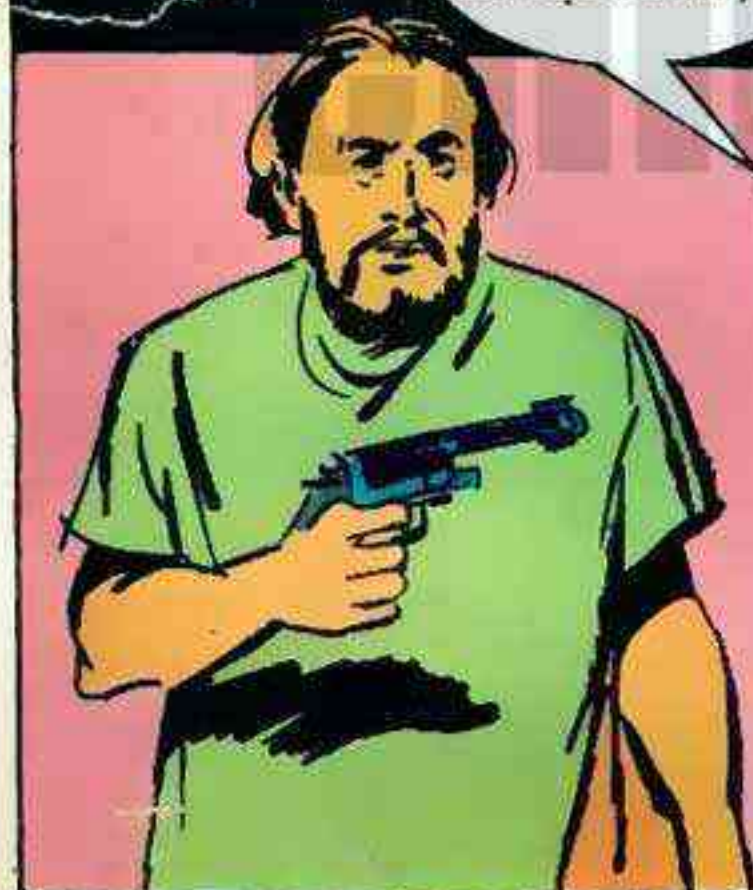
डॉक्टर शैतान का ध्यान कंकाल की ओर आकर्षित देख राम ने गजब की फुर्ती के साथ उस पर छलांग लगा दी
आह!

और प्रोफेसर दिवाकर ने आने वाले कंकालों पर किरणें छोड़ीं।
आ...ई...ई...!

अब बचकर कहां जाओगे शैतान!
उफ़!

उधर भूत-महल के बाहर —

इधर सहसा न जाने कहां से कई कंकाल प्रकट हुए और डॉक्टर शैतान की सहायता के लिये लपके, लेकिन प्रोफेसर दिवाकर ने उन्हें अपने रिवाल्वर का निशाना बना दिया।
आह!
हाय!
उफ़!

तभी मार खाते डॉक्टर शैतान ने राम पर घूंसे से जबरदस्त प्रहार किया।
ओफ्फ!
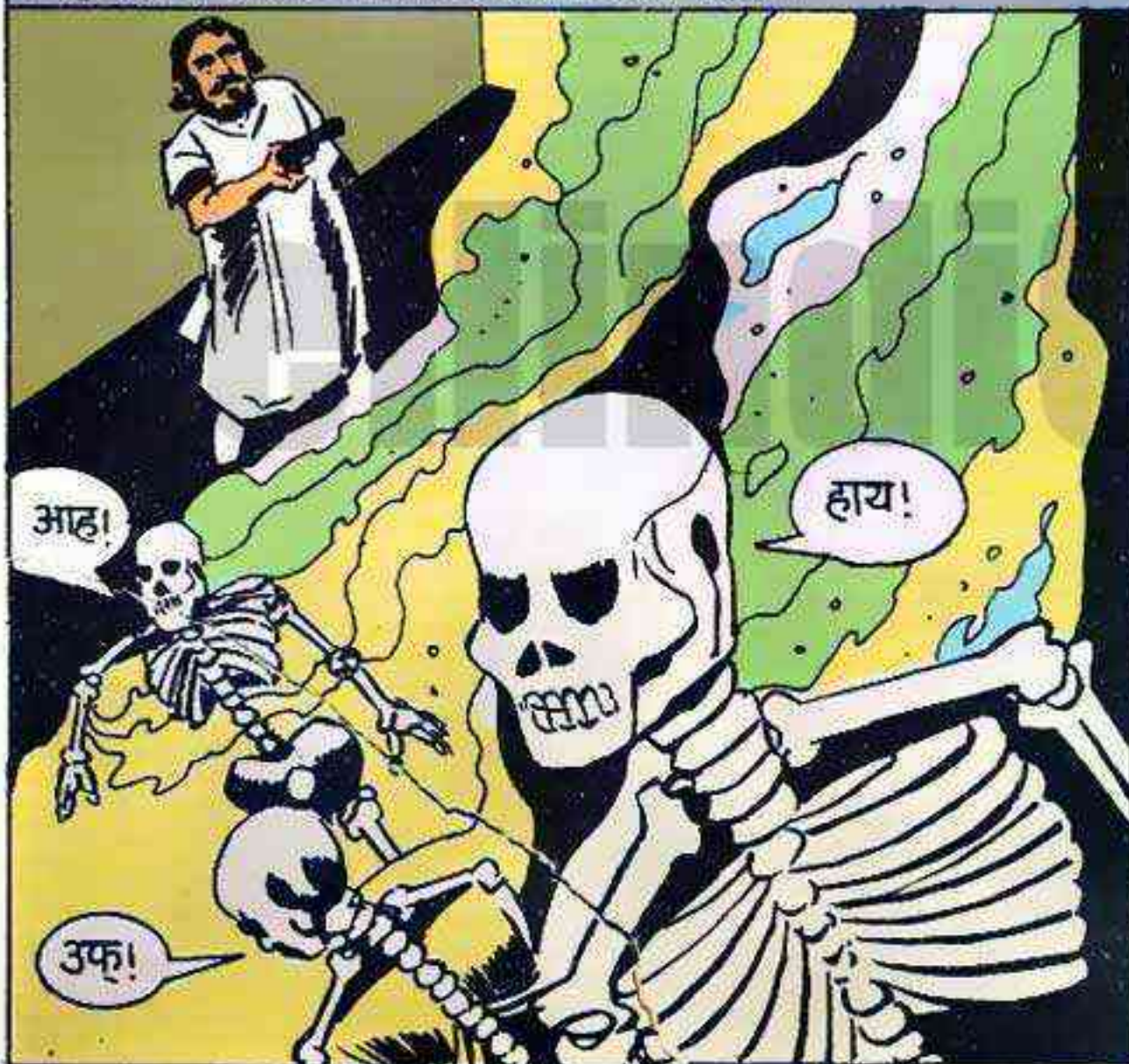
और फिर तेजी से दीवार पर लटकी तलवार के पास पहुंचा।
ओह! वह राम को मारने जा रहा है।

रहीम ने लपककर अपने पैरों के पास पड़ा चाकू उठा लिया।

रहीम का निशाना अचूक था।
आ...ई...ई..!

पुलिस ने भूत-महल पर कब्जा कर लिया। और इस तरह डॉक्टर शैतान की मौत के साथ ही शहर पर छाया ड्राक्युला बालक और कंकालों का आतंक भी समाप्त हो गया।
मुझे अफसोस है कि मैंने आपको गलत समझा।
अब तो आप सारी हकीकत जान ही चुके हैं इंस्पेक्टर साहब, अतः आप अपनी कागजी कार्यवाही पूरी कीजिये और हमें विदा दीजिये।

प्रोफेसर अंकल, आप भी चलिये न इस खुशी में हमारे घर। आपके लिये हम एक शानदार दावत का इंतजाम करेंगे।
नहीं बेटे, मुझ साधु का अब दावत से क्या वास्ता, तुम लोग जाओ और आनंद-पूर्वक रहो।

अगले दिन राम-रहीम के कारनामों की अखबारों में भूरि-भूरि प्रशंसा छपी और उसी दिन शाम को एक विशेष समारोह में स्वयं गृहमंत्री ने अपने हाथों से राम-रहीम को उनकी बहादुरी के लिये विशेष चक्र प्रदान किये।
तुम्हारा यह कारनामा भारत की जनता हमेशा याद रखेगी।
राम-रहीम
जिंदाबाद!